

तब तक सनसा तो दी जा कर के शुरु करी लवा जान ॥ अर्थ ॥
 अर्थ लेखरा उठाई मध्य भुं नो मे बैठा जाई ॥ वालानाथ नीरंजन
 कागम नयाई ॥ छट छट गोरख जोग वा आने ॥ अं वर वेला को ही
 वीर ले जा ने ॥ जो जाने सो सह ज सो जा ॥ उं वो ले ॥ प्र ग ट क है ना
 उं छट छट गोरख फीरै ॥ नीरंता को ही छट जा गे को ही छट
 ॥ छट छट गोरख क है क हानि ॥ क बा कु म रहे नवा नी
 क बा कुं भ गाली जाई ॥ सत सत भाषं तो श्री शं भुज ती गोरख
 राई छट छट गोरख फीरै उं दा स ॥ वी नु वर्धे फुलै फुल वारी
 वी नु सुप्र नाद वजावै ॥ वी नु रचना हरी के गुण गवै ॥
 छट ही मै सिद्ध ॥ छट ही मै सीद्ध ॥ छट ही मै मं दीर ॥ गीरी के

अउही मेवा बुजा गला जाके अउही ने सोत्रे माली. सा तल्लुदर छटके
वासी. मुला के रेखला नी जो जी हो के वरनी दाज भो. मद मास
में गा न दोर का हर सव युषान के जाई. सस भाव तो गुर.
रख राई. मद पीवंतं प्रारा सी रास भाग पीवंतं भूरे
स लये. दे वि ती चं नी वट. नी दू का ये सु वि नी व
है. रत्न भाग न का व प्र व ल धर न. ०
पिता ग अ भ गं मे मा तो से न व स जी न व ल व भा न मे
मा न ग र स्या न. भे दा मी. अ गी के सा थ स स सा थ त
गी गोर ब ना थ. जो जी हो के. प्रा वा जो गा वै. म न वी ल व
ता ये तो. रा जै भोग जो गा वै. क न क का मी नी ले जो हो ई.

2771
जोगेश्वर नी भय होई. छुर्वी री है क छ कि जानै. वा ह
र जाते. नी तर प्रा नै. प्र मे नी रं तर के मे टे मा ला. स्व व वा
री ना थ नी रं जन की का या. धु ता रा हू के छु ते. प्रा प जि
क्षा. भो जन ही सं ता व. प्रौ ठ प ट प ट मै भी क्षा करै से.
धु त सौ पुरी सं वरै. गर ही सोई जो गी र दे का या सर्व नी रं तर की
मे टे मा ला. सह ज सी ल की धरै स री र. सो जो गी क ही छे द्रो ज
गा को र्ति र. द्र व स सोई. जो दर्द की जा नै. उ ल ठा व ठ त ग ग
को ता नै. स य न्य वं ज. न दे वै ज्ञा न. सो द र्वा स क ही य स द
प्र की जा त. सं न्या सी सोई जो करै. सर्व की ना स. म
मो म तार वै न या स. पर म हं स की धरै ध्या त. सो सं न्या सी
क ही य सि द्धो. सं न्या स पर मारा. हुं ही सोई जो प्रा वा हुं डै आ व न

जावो तासा पुराणे • अने रीति रंतर की मेहे जाया • सोइ रिडि कली
वसी दोइ राइय मान • पद पद प रिडित • और मले जुना वै
प्रापने हू दय सावत लावै • पढ पढ रिडित च सुना धारी •
चत खन ले होवी • बाहु कलारवी सो हू कला शशी • सो हू का
वै ते बाहु कसे छे • तार कला सा धतौ • अमन नू कला जीवै •
धसा धन • गगन रंजत • उं नू नीला गंत तली • उं नू नीला गे तो
अमर प्रसीर • नाविन सै • काका नवीन सै जीद • जो गो क हू जु
कठी न हू • अगम की शुद्धी न ही शुली उं वर खे लना तो दी गो तो र
रना ही • शुली उं वर कै • वी छ करे अहार काल जी नपारे क्या करे
• प्राठै प्रहर बुसी पार • कं थली क थो दो प्रक्षर वाचो • गम अ
गम करी लेना • हंस नवी मले विंद न ठल कै जा जोगी सवे जं
वर वले नाए कंतर हे वा सुन फल द्याई वा • जर जर जरै अफला

कुरुल कली पर होवै • अंजुं वारु पप्रसस्त होवै मिर सयीवै • ता
ला टले तया छलै • ५१ एक तह मै छे ता छलै • काया कंधन रतन •
बात गुरु बाव दे रा छे जतने • सत गुरु पुढे मति कर चंगा • यस
वी श्री सुना • उंति मसंगा • कहुत हू कही जात हू • मारत हू हे
ला • गुरु के करनी गुरु जाय गा • चेला के करनी • जाय गा चेला •
कहुत हू • कही जात हू • हेला करै गुरु बाबा • ती अवी हू •
दा जोगी • छल कयरे सर कां रा • धावै हू कयूर वधाने • ना अजी
हू • एक जुठा • गगना मराडल मै • मठ बाधी कै • चेन सौ तय लाव
• उं ठत मारुं वै ठत मारुं • जागत • अता तीन अवन • भाग जाय
रौ • का हू जाय गा नीरंजन अवधुता • उठत समे रुं • वै ठत म
मे रुं • सुमे रुं जागत अता • तीन अवन सै ने रै रहु तो • मै सहे

अन अवे धुता • कालजीने को जीतली या मन मै बांधा मन न
बोः ॥ ॥ ॥ ई ती श्री नी रंजन गोरख बाल सत क भं भ म ॥ ॥

 पदं कादु पदो किता पदु मे
अन गुरु को पं जाली न्यास द ॥ ॐ प्रजा दी प्रादी स बी दा नंद
पुसी अरु अरु अकाल मुरत नी नये ये ज जो गा नरी धः सीद्ध ज
स्मरति कला यु री यर स त ॥ स मा ध्यः अजा जय प्र कर्मि वे त ॥
कर्मि वदी अ मन मन वी जान सुद्धी ॥ वैरा ग रा ग नी बी रा वारि ॥
अज या जय वीर ला जानी अज म ग म अ जो नी कु ल ॥ असं
सं र वाः अ म र ख व ल अ पार को अ पार वी र य को वी र य ॥ अ प्य न
य मा ध्य स र य ॥ अ चि द्रा बी दा गुर युर रा को ग ॥ सीद्धी साध ती

अ नो भोज ॥ ई ती स मा ध्य यु री नी बी रा रू प धार कै द भुं न प्र मे र
द नु प्रा कै प्रा प स त ॥ र द नी रा श्री क द नी क दै द ॥ अ ल व
ल य पु री स त ॥ गुरु को गुरु जान को जान ॥ अ स स मा धी ध्या
न को ध्या न ॥ सा व को सा षा म ती को म त ॥ भक्ति को भक्ति ज ती
ती को ज ग त ॥ दो द ॥ वी ना युर सर ती री त अ रै वी ना वी ज के
जी ज ॥ अ रै वी ना

११ १ ७ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
वेद को वी दा गा ई सु नो य रा डी त सा वा ॥ ती न वे दा वि वे द ले
वी ना का ग त म सी पा व य र डी त वी मु ष गा वै अं बे वी ना वी ना
र दो सी वे द ॥ १ ॥ चार वे द षट् सा स्त्र नौ वा क री अ ठार पुरा नी ॥ क वी
गार न या य वि ना अरु न को प द ती र वा नी ॥ २ ॥ काल कला जो ती रा स क

यसुरसीध्वंतवीचारी॥साईतयाव्रतहीताकोगमअप्रगमरा-
 मारी॥३॥तंत्रकोमंत्रभेदवीचारी.मुलबुटीब्रह्मचीत्याई॥४॥
 हीकोप्रातपीर.वैदेक्याजानेहातसमाई॥५॥कहैससीध्वरसुता
 साधुजोतीहोडीजोतसमाई॥देयोताहागादीजगमगयुरान
 तवसाई॥५॥

राजनीर्गुण॥ मरारैस न्ययदजमो मेरे भाई॥ चरराकमलवीनुसवन
रदुवैसरकपरेचतुराई॥ पुरराब्रह्मसकलतेजारे॥ चरराकमलचतुलाई
॥ एकजोनीतैचारीवरराभयब्रह्मजोनीकाहाया॥ मन॥१॥ जाननाई
यजैब्रह्मनचीहै॥ प्राफुकाहासोप्राय॥ तीनसुतसोचारीवरराभयतौमन
जनेईतगाय॥ मन॥२॥ सर्वहीजुनीब्रह्महीभीतरदुनीयाभावनाताही॥
लक्षचौरासीजीवाजोनीमेवरतीरहैसबवाहीमन॥३॥ हीउयजुर्वेदज्ञान

कर मसुवास्या म भ्रमर्वेदवन सोई ॥ सुदीमवेद की बवरी नया व्र. से कौसे वा
ल न होई: मन ॥ ४ ॥ वं स गा छत्री गुरु भ्रम स्याने भ्रज वा जयै स्थीर ना ही ॥ स
ध्यात र्यन ता द की हु जा हा कुर वी नु पानी ॥ मन रे ॥ ५ ॥ क ह त क वीर सो ही गुन
मे रा का थ जने उ सोई ॥ पा ष रा ड के ग ती स व न र त्पा ग्यो त न त्पै वं स रा होई:
मन ॥ ६ ॥

राग नीगुन ॥ प्रजर जरि प्रजर जरी नमरा गुफा में ध्यान करी ॥ गंगा ज म
मा पीनली सरस्वती नद वीर की गाठी यरी कल दस जो तीर्थ प्राप्ति तों हों
अक साधु ध्यान करी ॥ १ ॥ ककुटा संग मैवा जनवा जारुनु जुनुत ब्रकी बोध
री ॥ गगन मदीर माता लीला जी दस ही द्वारं माधवरयरी ॥ २ ॥ आक ही व
र दीत प्राक ही जोगी जानहिं वीचार रावी वेध लरी ॥ कहत कवीर सुने मा
ईसाधु प्रादी अंत को वीवेध करी अज ॥ ३ ॥

प्रादी प्रंत में विं शेष क सुप्र ज्ञाह मति
हर रा रा प्रा दा दां का प प प प प प प प प प

राग गंगुन॥ कौने माँगी प्राई सत्ता कौने माँगे जाई• करता नाही हो
सरो गती मती भुलो रे भाई॥ प्राई ने तो प्राई गया जाने की बढई
प्राई नव द्वार चौकी वैठे दस द्वार के वार लजाई॥ माता के गरज
बने पीता के सत जाई• बाह्य प्रवर करता भीष की प्राक वने रे भाई॥
२॥ छमै युद्धो अगम के नीग मतु मुसत वताई• माता सो बैदा जय की दीता
कर हं से आई॥ एक माँ रिस बली आब बाँहों से अनक जुगती लाई• कीरी
इला के वार लागे कुची काँदो सरा आई॥ ५॥ के देस सी दरसन गुरु सब जाहा
काई• तोली आखन मोलवी काई॥ ५॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जा

दोहा ॥ जाके हा गुन रही ताके ताहा को णवो वी वसी क्या करे दी गम्वर के गाउ ॥ १ ॥

राग नीगुन ॥ संतो आई गोधी हजनी उय जाई ॥ जगत वैरा जे उई ठाव नाई जे चमो हो दुनु

उई ठाई पुन चतु मारे जे हो आई ॥ सुरत के जग उल जाई ॥ १ ॥ तन के सब मन के चागा व

जी के कतु नाव नाई ॥ तीन गुन जोरी सीका वनाई पुन के जने उल जाई ॥ २ ॥ जही राग के

वर्त कुल नाही उगनी चाव रो वर दूई ॥ उगनी चाव हो कही कही त नीरै चतै नर क

जाई ॥ ३ ॥ दास गुरु के बल वीर जाई आपु तै आपु न जाई ॥ उगनी चाव तै वरो व

र होई ॥ तव तै ब्रह्मा कहाई ॥ ४ ॥ संतो आई गो वंद जनी उय जाई ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दोहा ॥ माता नही पीता नही नही ह मारे जग त जानी कहो माता प्राप जा जी दे

को सव राम ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ सदा न कुले के वरा सदा न वन होई सदा न रहै वन दो मा

न सदा न जीवै कोई ॥ १ ॥ ॥ ॥

राग नीगुन ॥ रमी चले जो गो प्र मरपुर का सो गली गये का थाप न लो जी का काज

री गये का था उदी गये बा जा ॥ रमी ॥ १ ॥ ग्रावत जो जी सब को ही दे पारमी चले जो जी के

रूप न रेखा ॥ रमी ॥ २ ॥ सो वत जा गत सपती दे बा पदी पदी मुले आपु नो रेखा ॥ रमी ॥

३ ॥ कहत ससी धर बाट बाट चली चली गाठार नी चले जो जी के संगत साथा ॥

रम ॥ ४ ॥ ॥ जग जयै प्रज पावु जे प्र न हवर है सकल सरीर अंड पिंद ज वा

स लज वना स हो वै जो जी का बेल रहै समाई ॥ १ ॥

श्री गीता

सा

आदा दो वेगल का ता स प्र दानि सा

आदायवेनालसगासुद्रात्रीलली-लरी

ॐ वा रुचलातोऽप्रवाद्या वतद्वलिस तितकारततः ३ को के १११
 सर्वद्रियेगुणभासं सर्वद्रियेविवर्जितं ॥ असकलं सर्व भूवेव निर्गुणं गुणभक्त
 गुणैर्गुणं मुक्तिर्गुणं धिद्वतांते धिद्वताचारितं ॥ प्राकृतं ह्यपरिततांते
 तांते ॥ ११ ॥ आकाशवत्पुनः

आदाय वेस्तस काला युक्त ५१

रागनीर्गुन॥ प्रवचुं ऐसे ग्या रावी चारी को नो दुख को नो नारीः व्रसन
 प्राप्ता नी हो तीः जो जी के घर बेगीः कली में पड़ी पड़ी तु कि नी हो ती॥ तात्पे की मे
 व के ली॥१॥ प्रवचुं न मै बाहीः न मै कुमारीः पुत जनी जनी हारी का लामु
 ये कु न हाइ उ मे तो जगं त की पारी॥२॥ प्रवचुं स सुरु मार वा लामो नारी
 मारी क नारी ये बा ह मार पल न गुल न हैः हल हो ज ला वली
 प्रवचुं स सुरु मार जा उ स सुरु मार उ ता ह प्रन रवे व नार ज न धा
 क वीर सुनो माई साधु अंग मै अंग मी ला उ॥४॥ प्रवचुं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 राग सो रहा मती वी नारा म को हा ग य स धा॥ दी दं ये क म ल मै वं सा वीर जी
 ता मती वी ना प्रसंग हो ई॥१॥ ज उ न मती से प्रसं न करो सो मती ई न्द्री मु ला ई॥२॥
 प्रमु के वर न क म ल परं पी त ल गा उ ज ज दा स कह त सोरी॥३॥